ओ३म्

आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(संक्षिप्त रंगीन सचित्र जीवनी)

ओ३म्

जन्म- सम्वत् 1881 फाल्गुन वदी दसवीं 12 फरवरी 1824 को गुजरात के मौरवी प्रांत के ग्राम टंकारा में कर्षनजी तिवारी जो जन्म से ही औदीच्य ब्राह्मण थे, उनके घर एक सुन्दर बालक ने जन्म लिया, मूल नक्षत्र में जन्म होने के कारण माता-पिता ने उनका नाम मूलशंकर रखा।

महाशिवरात्रि "बोधरात्रि" बन गई

शिवरात्रि के दिन मूलशंकर ने मन्दिर में देखा कि कुछ चूहे शिवलिंग पर चढ़ा प्रसाद खा रहे हैं, बालक से रहा नहीं गया।

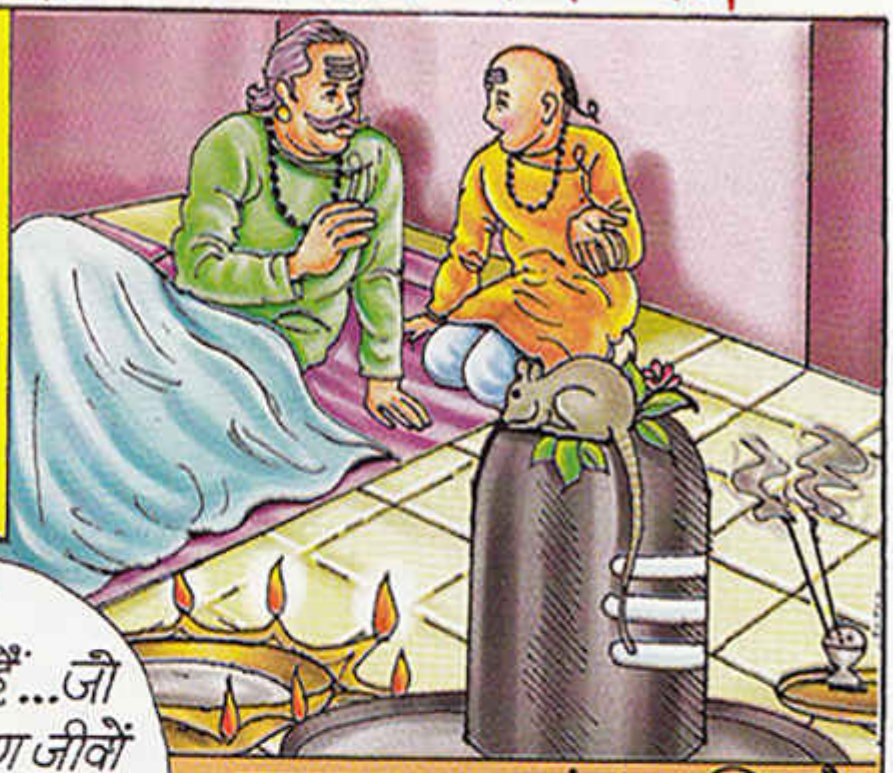

पिताजी! यह कैसा भगवान हैं...जो चूहों जैसे साधारण जीवों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता, वह हमारी रक्षा कैसे करेगा?

यह कहकर मूलशंकर मन्दिर से निकल कर घर चला गया।

मैं सच्चे शिव को पाकर रहूँगा।

शिवरात्रि का वह दिन मूलशंकर के लिए "बोध-रात्रि" बन गया।

दो ऐसी घटनाएँ हुई जिसने मूलशंकर की जीवन धारा का रुख बदल दिया। "एक प्यारी बहन की मृत्यु" और दूसरा झटका उन्हें...

इस मृत्यु का रहस्य जानना चाहिए।

"अपने चाचा की असमय मौत का लगा।

फिर एक रात मूलशंकर चुप-चाप सत्य की खोज में घर से निकल-पड़ा... रास्ते में पाखण्डी साधुओं की टोली ने उसे लूटा-

तुम कौन हो- बच्चा, और कहाँ जा रहे हो?

बाबा! मुझे सच्चे ईश्वर की तलाश है, उसी की खोज में निकला हूँ।

हम तुम्हें सच्चे ईश्वर से मिला देंगे, पर तुम्हें इन आभूषणों का त्याग करना होगा।

मूलशंकर ने सारे आभूषण उतार कर साधुओं को सौंप दिये, और अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ गये।

औरवी मठ-

सच्चे गुरु की तलाश में एक दिन मूलशंकर 'औरवी मठ' पहुँचे। मठाधीश उनका तेजस्वी व्यक्तित्व देख-कर बड़े प्रभावित हुवे। वहाँ ठहर कर मूलशंकर ने देखा कि वेदों के नाम पर ऊल-जलूल ग्रंथ पढ़ाये जा रहे थे।

दीक्षा-

एक दर्दनाक घटना–

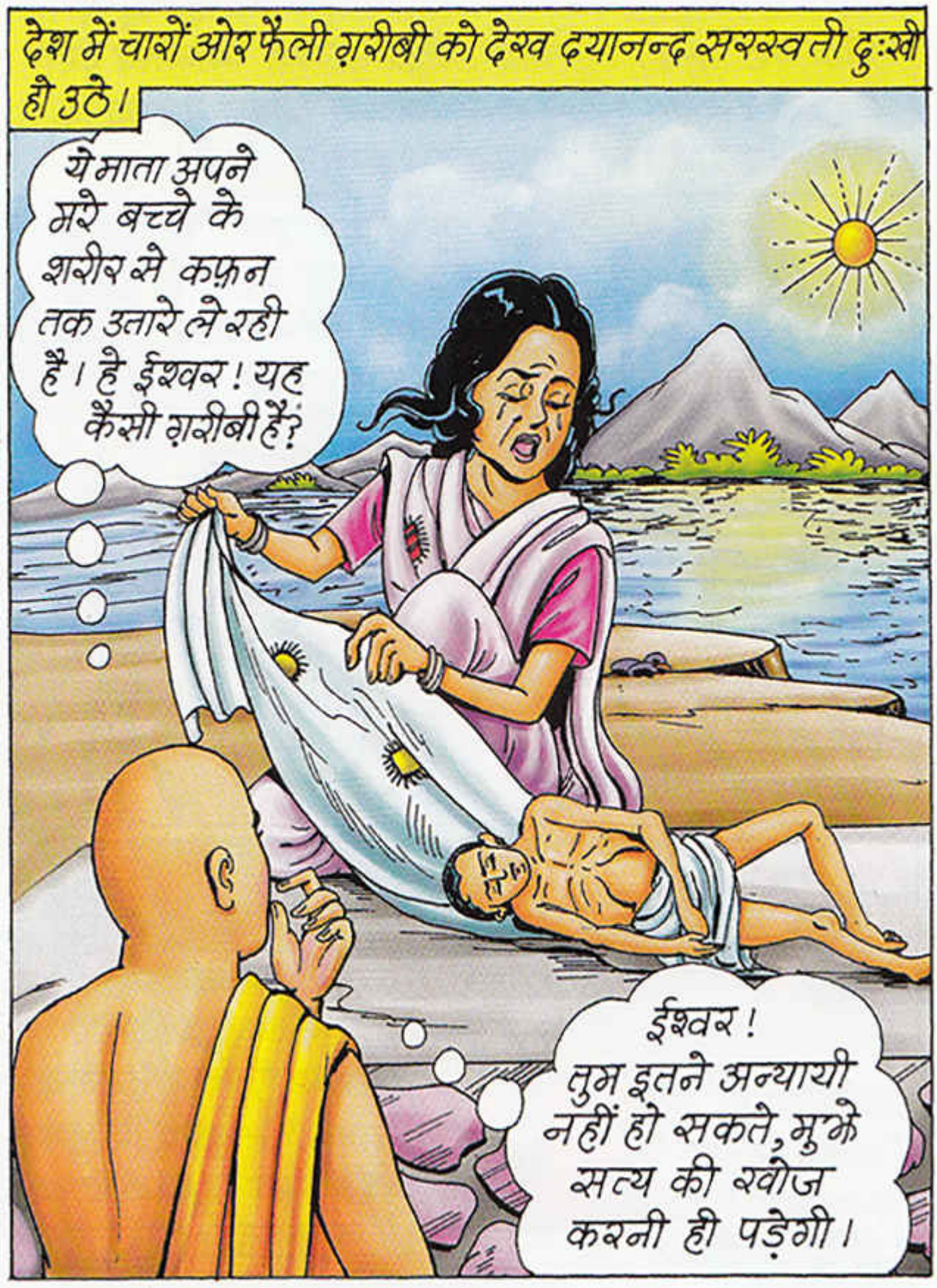

देश में चारों ओर फैली ग़रीबी को देख दयानन्द सरस्वती दुःखी हो उठे।
ये माता अपने मरे बच्चे के शरीर से कफ़न तक उतारे ले रही है। हे ईश्वर! यह कैसी ग़रीबी है?
ईश्वर! तुम इतने अन्यायी नहीं हो सकते, मुझे सत्य की खोज करनी ही पड़ेगी।

गुरु दक्षिणा- सच्चे गुरु की तलाश में दयानन्द, स्वामी विरजानन्द से मिले उस समय उनकी अवस्था ३६ वर्ष की थी। उन्होंने उनसे वेद का ज्ञान प्राप्त किया। उस समय शिक्षा प्राप्ति..

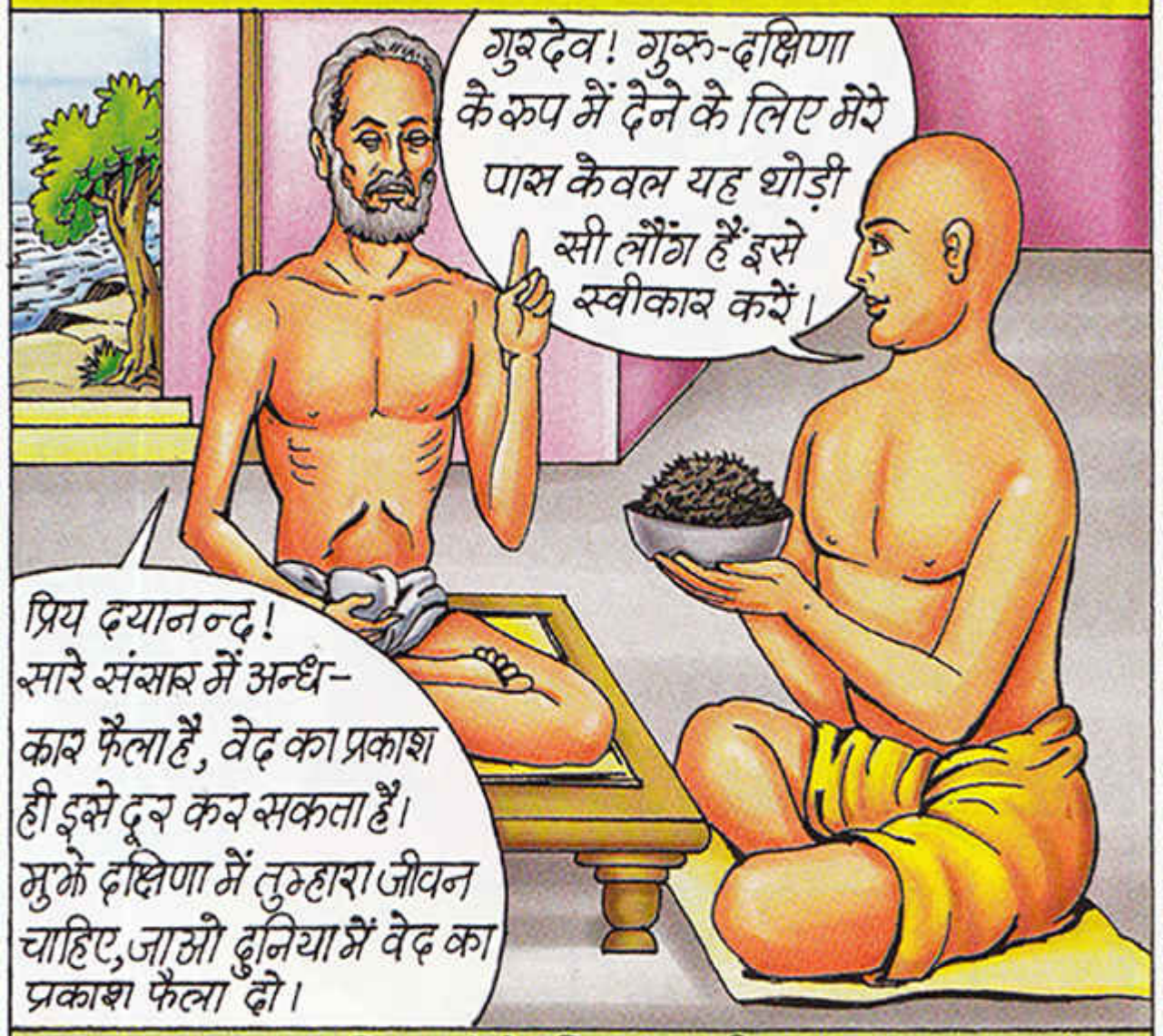

... के बाद गुरु-दक्षिणा देने की प्रथा थी। दयानन्द के पास किसी व्यापारी द्वारा दी गई कुछ लौंग थी उसे ही उन्होंने गुरु-दक्षिणा के रूप में अर्पित कर दी। गुरु चरणों में शीश नवाया फिर स्वामी दयानन्द पूरे ध्यान से वेद प्रचार कार्य में जुट गये।

आर्यसमाज की स्थापना-

सम्वत् 1932 को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा बुधवार के दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मुम्बई में प्रथम **आर्यसमाज** नामक संस्था की नींव डाली। जिसका लक्ष्य था **वेद प्रचार**। देश एवं मानव मात्र का कल्याण

मानव-मानव एक समान

वनवासियों, स्त्रियों, दलितों और अछूतों को भी स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जनेऊ पहनाये।

उन्होंनें देश के सभी वर्गों में समाज सुधार का कार्य किया।वनवासी क्षेत्रों में उनके कार्यों से प्रभावित होकर भील नेता **'विरसा मुण्डा'** व **'गुरु गोविन्द'** से मिलकर युवकों ने सुधारवादी कार्य किये।

लोगों को बन्दी बनाने नहीं आया—

अनूप शहर में एक ब्राह्मण ने स्वामीजी को पान द्वारा ज़हर दे दिया। स्वामीजी ने यौगिक क्रियाओं के द्वारा ज़हर को अपने शरीर से निकाल दिया, और स्वस्थ हो गये। तहसीलदार उस ब्राह्मण को कैद करके स्वामीजी के सामने ले आया।

सैयद साहब! कृपा करके इसे छोड़ दें। मैं तो लोगों को मुक्त कराने आया हूँ, बन्धनों में कैसे डाल दूँ?

नारी उत्थान—

सती प्रथा का विरोध व विधवा विवाह का समर्थन कर करोड़ों विधवाओं को नवजीवन प्रदान किया, तथा कन्या विद्यालय प्रारम्भ करवाये।

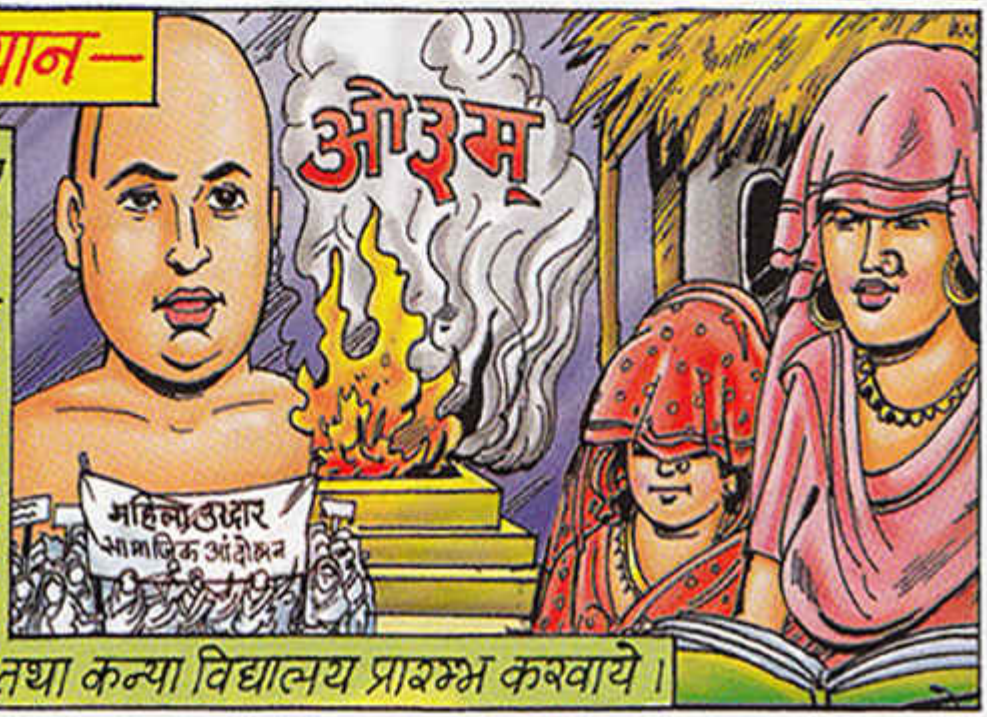

ब्रह्मचर्य शक्ति का प्रदर्शन–

जालन्धर के सरदार विक्रम-सिंह ने स्वामीजी से कहाँ कि आप ब्रह्मचर्य से अतुलबल की प्राप्ति की बात करते हैं, पर इसका सबूत क्या हैं? उस समय स्वामीजी चुप रहे। पर जब विक्रमसिंह अपनी बग्गी में बैठकर जाने लगे, तब उन्होंने बग्गी का एक पहिया अपने हाथ से पकड़ लिया। बग्गी अपनी जगह से टस से मस नहीं हुई तब सरदार विक्रमसिंह को ब्रह्मचर्य के बल का सबूत मिल गया।

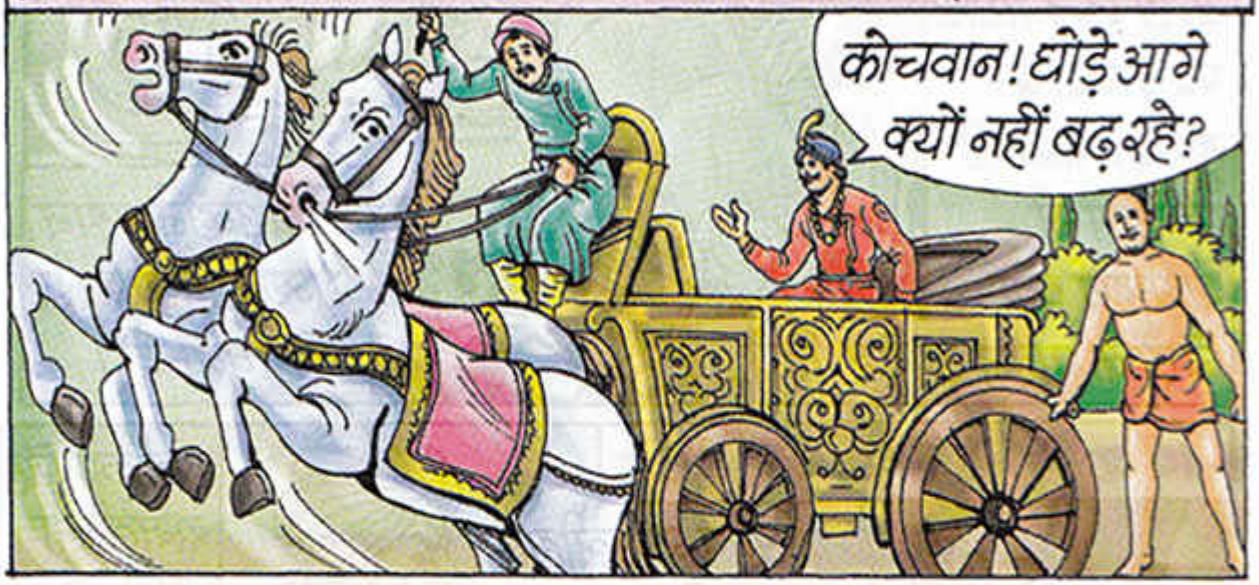

स्वराज के आदि मंत्र दाता–

कुरीतियों के विरुद्ध शास्त्रार्थ–

विदेश जाना, मृतक श्राद्ध, दहेज, नारियों व अछूतों के लिए धार्मिक प्रतिबन्ध हिन्दू समाज पर कलंक बने हुए थे। पाखण्डी पण्डितों से शास्त्रार्थ कर वेदों के पावन उपदेश दिये...

...तथा उन्होंने महान ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की।

राव कर्णसिंह का गर्व टूटा–

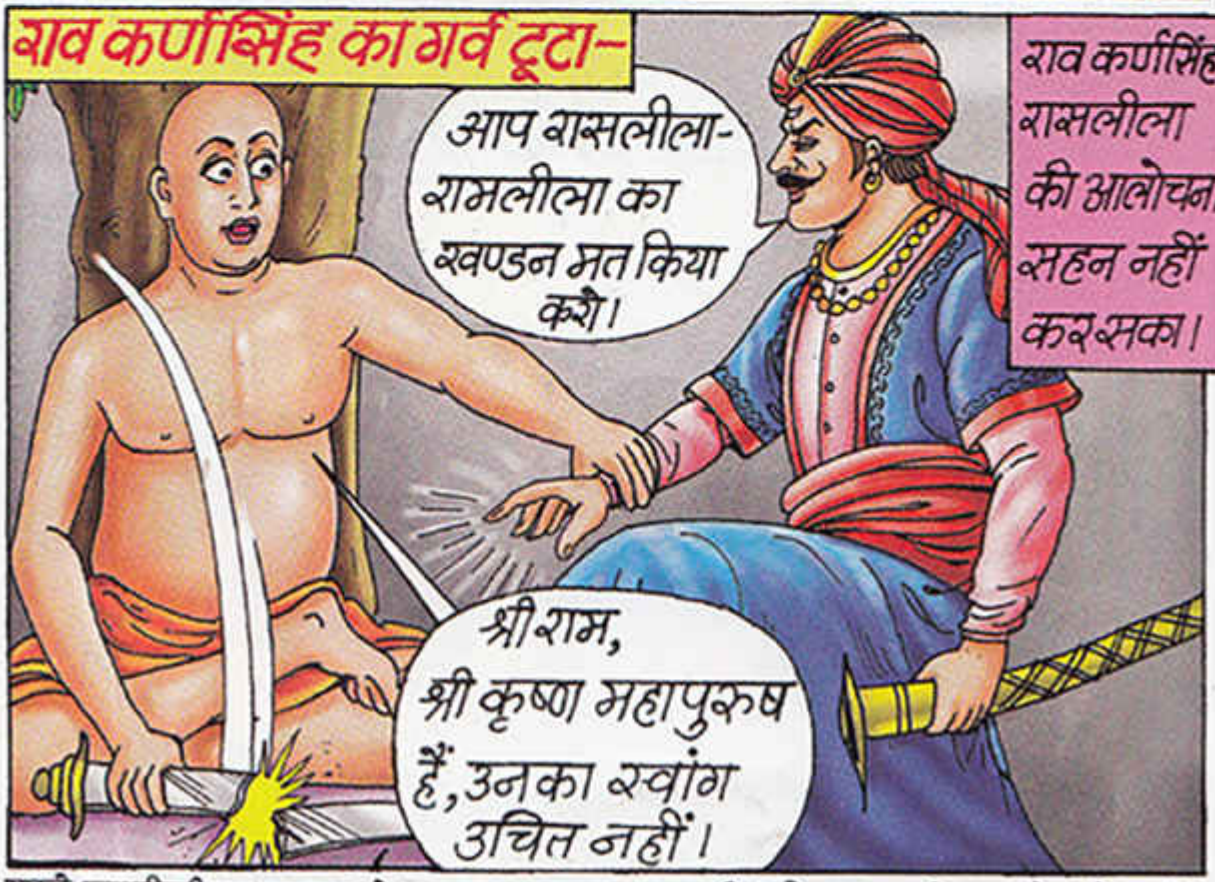

राव कर्णसिंह रासलीला की आलोचना सहन नहीं कर सका।

*उसने स्वामीजी पर तलवार से वार करना चाहा पर स्वामीजी ने तलवार छीनकर दो टुकड़े कर दिये।

जोधपुर गमन-

जोधपुर जाते समय आर्यों ने स्वामीजी से प्रार्थना की-

जोधपुर में-

जब जोधपुर नरेश को नन्हीं नाम की नाचने वाली के साथ देखा तो स्वामीजी खिन्न हो उठे।

अंग्रेज़ों व नन्हीं जान की साज़िश से रसोइये ने काँचयुक्त दूध में ज़हर मिला कर स्वामीजी को दे दिया।

हत्यारे को क्षमादान-

स्वामीजी के पूरे शरीर से ज़हर फूटने लगा अंततः रसोइये को अपनी ग़लती महसूस हुई, उसने स्वामीजी से माफ़ी मांगी।

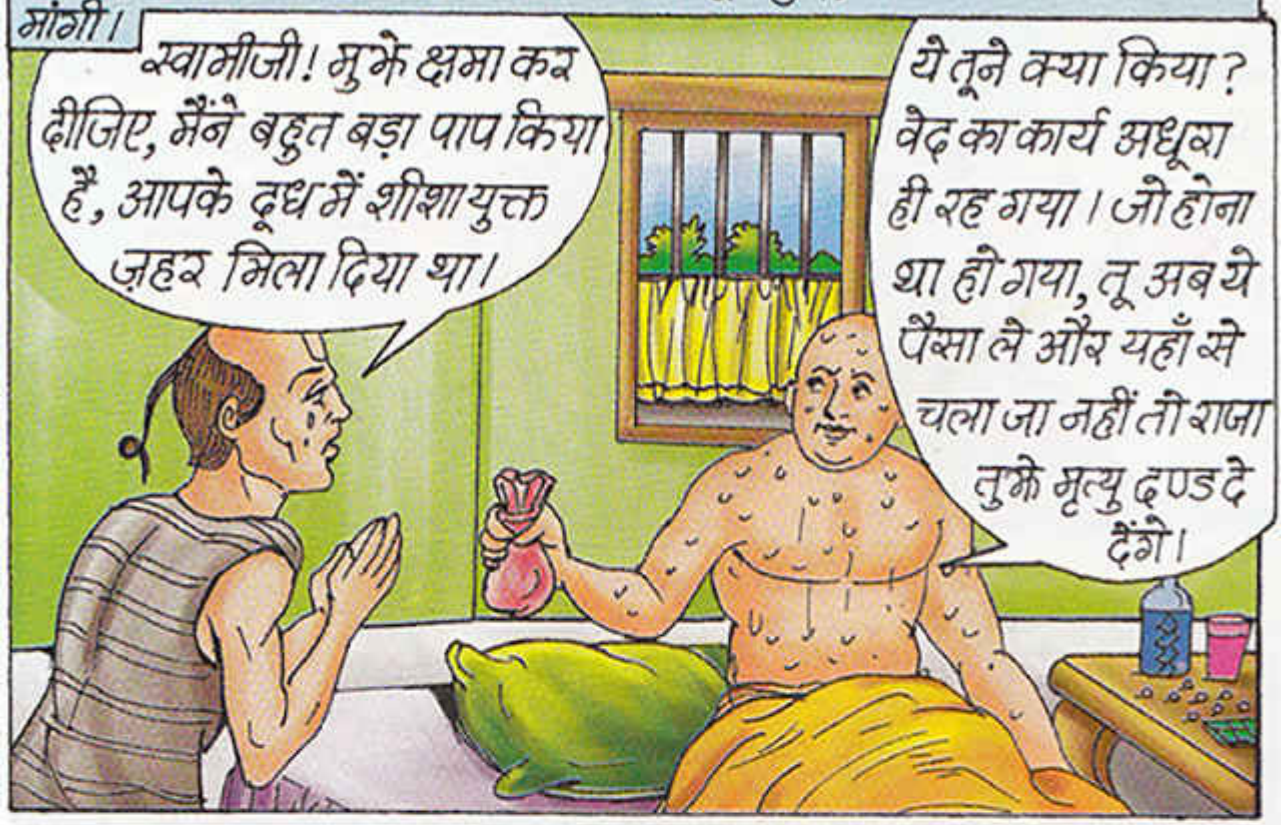

मृत्युञ्जयी दयानन्द-

अजमेर में 30 अक्तूबर सन् 1883 ई.* को अत्यन्त कष्ट-दायक स्थिति होते हुए भी प्रसन्नचित्त योगमुद्रा में प्राण त्यागते देख गुरुदत्त (नास्तिक युवक) का जीवन ही पलट गया। वह वैदिक धर्म का दीवाना 'पं. गुरुदत्त विद्यार्थी' कहलाया।

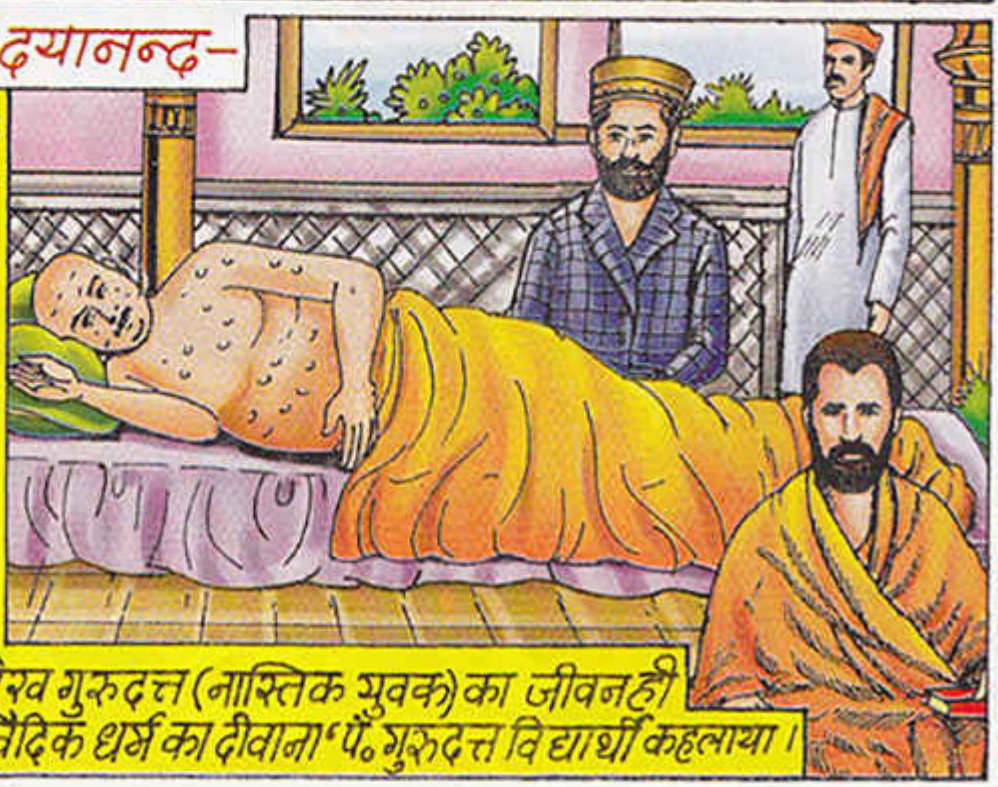

* दीपावली के दिन

'सत्यार्थ प्रकाश' का वैचारिक प्रभाव

उदयपुर में महर्षि के 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना से 'वैचारिक क्रान्ति' का आन्दोलन तेज हो गया। अनेक नौजवान वैदिक धर्म में दीक्षित होकर स्वसंस्कृति, स्वराज्य-संघर्ष के लिए तैयार होने लगे।

श्याम जी कृष्ण वर्मा

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

श्रद्धानन्द

लाजपत राय

स्वामी दयानन्द सरस्वती

पं० लेखराम

चन्द्र शेखर

रामप्रसाद बिस्मिल

भगत सिंह

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का संपूर्ण "जीवन चरित्र" एवं उनकी अनमोल रचना "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ने के लिए इस पृष्ठ के पीछे भाग में लिखे पते से सम्पर्क कर सकते हैं।